क्रूस का रास्ता

प्रारम्भ गीत

क्रूस पर जान देने वाले, मरकर विजय प्राप्त करने वाले
आँसू बहाते हुए, चलते हैं तेरे पीछे-पीछे हम।
शिष्य बनने की आशा हम करते हैं तेरे, ओ जग के स्वामी!
तूने कहा है - 'क्रूस अपना उठाके मेरे पीछे तुम हो लो'
धो देना मेरे पापों को अपने लहू से, हे जग के स्वामी। (2)

पहले स्थान की ओर:

मृत्यु द ड़ दिया गया, स्वर्ग से उतरे इस मेमने को
निष्पापी ईश पुत्र को लोगों ने अपराधी घोषित किया;
निर्दोष होकर भी, पावन होकर भी, पापों को तुझपे रोंपा
दया तूने जिसपर की, उसने ही दिल को तेरे भारी दुःख पहुँचाया
न्याय के दिन तू दया हमपे करना, स्वर्ग में स्थान हमें देना। (2)

प्रार्थनाँए

दूसरे स्थान की ओर:

कन्धों पर क्रूस उठाके, सबके पापों को उठा लिया
चलते हैं धीरे-धीरे अपनी निन्दा को सुनते हुए
तुम लोगों के संग ऐसा मैंने क्या किया जो मुझे क्रूस दे दिया
मधु की नदियाँ जहाँ बहती रहती थीं, वहाँ तुमको मैं लाया था
भूल गए तुम सब लोग उन सब खुशियों को,
ठेस पहुँची मेरी आत्मा को । (2)

प्रार्थनाँए

तीसरे स्थान की ओर:

भारी क्रूस उठाने की क्षमता अब येशु में न रही
पत्थर भरी राह पर, वह लड़खड़ा कर गिर पड़े
पवित्र चरणों ने ठोकर ऐसी खाई, माथे पर है चोट आई;
न है आकाश में, न कोई भूमि पर, जो तेरा क्रूस उठाये
करते नमन उन चरणों को हम सब, रोकर करते हैं पश्चाताप । (2)

प्रार्थनाँए

चौथे स्थान की ओर:

रोती हुई आई माँ को प्रभु ने मुड़कर देखा,
आपस में आँखें मिली, दुःख से आँसू बहने लगे;
'किससे मैं तेरी तुलना ऐसे करूँ, दुःख के हे महासागर?'
दिल के तुम्हारे दुःख कौन जाने? पीड़ा को कौन पहचाने?
आँसुओं से अपने, हमारे गुनाहों को, तू ही दया कर धो देना । (2)

प्रार्थनाँए

पाँचवें स्थान की ओर:

क्रूस ढ़ोते येशु की सिमोन ने अब सहायता की
प्रभु के क्रूस ढ़ोने का सिमोन को यूँ सौभाग्य मिला;
क्रूस तेरा महिमामयी और सुखदायी है, तेरा जुआ हल्का है
दुःखियों को आश्रय देने वाले उस क्रूस की करें वंदना
राजाओं के राजा, क्रूस उठा लें तेरा, देना हमें यह वरदान। (2)

प्रार्थनाँए

छठवें स्थान की ओर:

खून से भरा वह चेहरा, और क्षीण हुई वो आँखें,
वेरोनिका ने बढ़कर प्रभु के चेहरे को पोंछा;
आनन्द देता स्वर्गदूतों को ऐसा तेरा दिव्य प्रकाश;
ताबोर पर्वत पर, सूर्य समान उज्जवल था तेरा प्यारा चेहरा;
आज उस मुख पर फीकी है ज्योति, दुःख के सागर में जो डूबी। (2)

प्रार्थनाँए

सातवें स्थान की ओर:

दोपहर की तेज धूप से और कोड़ों की मार से
चलना और मुश्किल हुआ - रक्षक फिर से धरती पर गिरा;
लोगों के पापों ने तुझको गिरा दिया, तुझे दुःख दर्द दिया;
पापों से हमारे, क्रूस हुआ और भारी, उठाना और मुश्किल हुआ;
छूते तेरे चरण, करना हम पर रहम,
सच्चे दिल से करते पश्चाताप। (2)

प्रार्थनाँए

आठवें स्थान की ओर:

'येरूसालेम की पुत्रियों, तुम मेरे लिए क्यों रोते हो?
अपने और अपने पुत्रों के लिए तुम आँसू बहाओ।'
कहते हैं ऐसे सबको प्रभु येशु, चुप रहकर सब सहते हैं;
दुःख की है घड़ियाँ, देख कर स्त्रियाँ, घुट-घुट कर सब रोती हैं;
रोना तुम अपने पापों के लिए, देते यूँ सबको दिलासा। (2)

प्रार्थनाँए

नौवें स्थान की ओर:

मानव पुत्र का शरीर अब निर्बल होता जा रहा,
क्रूस के साथ पत्थरों पर तीसरी बार प्रभु गिर पड़े;
मोम की तरह उनका दिल है पिघलता, सारा बदन है टूट गया;
सूखी जुबान है, सूखा गला है, न फिर भी शिकवा गिला
सहने की ताकत अब नहीं है उनमें, मृत्यु करीब आई उनके। (2)

प्रार्थनाँए

दसवें स्थान की ओर:

पहुँची दुःख की यह यात्रा कलवरी पहाड़ के ऊपर,
नाथ के वस्त्र सारे शत्रुओं ने उतार लिए
पापी, दुष्ट लोगों ने उनको है घेरा, उनपर ऐसा जुल्म है ढ़ाया;
खून से लिपटे, घावों से चिपके, कपड़ों को खींच उतारा;
उन पवित्र वस्त्रों को, उन श्वेत वस्त्रों को, उन्होंने आपस में बाँटा। (2)

प्रार्थनाँए

ग्यारहवें स्थान की ओर:

जिन हाथों-पैरों ने लोगों को है मुक्ति दिलाई,
उन को क्रूस पर लिटाया, हाथों-पैरों को कील से ठोंका;
खून के फुव्वारे ऐसे बहने लगे, दर्द की सीमा न रही
निर्दयी दुष्टों ने टाँगा उन्हें क्रूस पे, वह ईश्वर का बलित मेमना;
दर्द से तड़पते हमारे मसीहा, हमारी सजा हैं वह पाते। (2)

प्रार्थनाँए

बारहवें स्थान की ओर:

त्रिलोक नाथ येशु ने क्रूस पर जीवन को त्याग दिया,
सूरज काला पड़ गया, चहुँ ओर अँधेरा छा गया;
'लोमड़ियों की अपनी-अपनी है माँदें, पक्षियों के अपने घोंसले;
मानव पुत्र के लिए कोई जगह नहीं है, जो उनका सिर भी ढ़के'
गौशाले से क्रूस तक, निर्धन रहे वह, हैं वो गरीबों के मसीहा। (2)

प्रार्थनाँए

तेरहवें स्थान की ओर:

निष्प्राण बेटे का शरीर रख लिया माँ ने आँचल में,
किस से कहे अपना दुःख? दर्द का सागर उमड़ पड़ा;
एक तेज तलवार हृदय को है चीरती, दर्द इतना तू है सहती;
उस दुःख के पल में कौन दिलासा देगा? कौन तेरे आँसु पोंछेगा?
जैसे तूने पूरी की इच्छा पिता की ऐसा मैं भी कर सकूँ हे माँ। (2)

प्रार्थनाँए

चौदहवें स्थान की ओर:

प्रेमी प्रभु का मृत देह उनके चेलों ने दफना दिया
मृत्यु पर विजयी होगा, कब्र में है जीवन का जो स्रोत
एकलौता पुत्र है तू परमेश्वर का, दूतों के बीच तू जन्मा;
क्रूस मरण द्वारा हमें पापमुक्त किया, सच्चा प्रेम हमें दिखाया;
तीन दिन पश्चात् तू जी उठेगा, सब बंधन तू तोड़ देगा। (2)

प्रार्थनाँए

समापन गीत:

प्रभु ने प्रेम किया, अपना सर्वस्व अर्पित किया
कितना है कष्ट सहा, फिर भी देता हमें आशीर्वाद;
चन्दन-सी काया की निन्दा की हमने, हमने तुझे क्रूस पर चढ़ाया;
क्षमा करना हमको, निर्दय थे हम लोग, आभार भी प्रकट नहीं किया;
तेरे दुःख को करके याद आँसु बहाने का, दे दे तू हमको वरदान। (2)

प्रार्थनाँए

1. हे खीस्त हम तेरी आराधना करते हैं और तुझे धन्य कहते हैं, क्योंकि तूने अपने पवित्र क्रूस के द्वारा हमें बचाया है।
2. प्रार्थना और चिन्तन
3. **हे पिता हमारे**... **प्रणाम मरिया**...
   पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा ...
4. हे प्रभु दया कर, हे खीस्त दया कर। हे पवित्र माँ, तेरे पुत्र के क्रूस के पीछे आने के लिए, हमारे लिए प्रार्थना कर।

WELCOME TO
Jeevan Dham ©
Visit us at : www.jeevandham.org